कियामत की नीशानीया

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

कियामत की नीशानीयो मे से
कुर्बे कियामत और रूयते हिलाल
क्या ऐसा भी होगा?
सुरज रोजाना अल्लाह को सजदा करता हे

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

कियामत की नीशानीयो मे से

हजरत इब्न मसउद(रदी) फरमाते हे नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया कियामत की नीशानीयो मे से ये हे के
1 आदमी मस्जीद से गुजर जायेंगा मगर उसमे दो रकात नमाज नहीं पढेगा,
2 आदमी सिर्फ अपनी जान पहचान के लोगो को सलाम करेगा,
3 एक मामुली बच्चा भी बूढे आदमी को सिर्फ उसकी तंगदस्ती की वजह से डाटेगा
4 जो लोग कभी नंगे भुके बकरिया चराया करते थे, वो उंची उंची बिल्डिंगो मे डींगे मारेंगे. (बैहकी)

कुर्बे कियामत और रूयते हिलाल

कियामत के करीब की एक निशानी ये हे कि चांद

पहले से देख लिया जायेंगा, और पहली तारीख के चांद को कहा जायेंगा, कि ये तो दुसरी तारीख का चांद हे, और मस्जीदो को आम गुजरने की जगह बना लिया जायेंगा, और अचानक की मौत आम हो जायेगी.

क्या ऐसा भी होगा?

मुसा बिन इसा मदीनी(रह) से रिवायत हे नबी करीम ﷺ ने फरमाया उस वकत तूम्हारा क्या हाल होगा जब तूम्हारे नवजवान बदकार हो जायेंगे, और तुम्हारी लडकियां और औरतें तमाम हदे पार कर जायेंगी, सहाबा(रदी) ने अर्ज़ किया या रसुलल्लाह! क्या ऐसा भी होगा, फरमाया हा और इससे भी बढकर उस वकत तूम्हारा क्या हाल होगा जब तुम ना तो भलाई का हुकम करोगे और ना बुराई से रोकोगे, सहाबा(रदी) ने अर्ज़ किया या रसुलल्लाह! क्या ऐसा भी होगा, फरमाया हा और इससे भी बदतर, उस वकत तुम पर क्या गुजरेगी जब तुम बुराई को भलाई और भलाई को बुराई समझने लगोगे.

सुरज रोजाना अल्लाह को सजदा करता हे

हजरत अबुजर(रदी) से रिवायत हे नबी करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया जानते हो ये सुरज डूब कर कहा

जाता हे? मेने कहा अल्लाह और उस्के रसुल ही खुब जानते हे, नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया कि वो अर्श के नीचे जाकर अल्लाह को सजदा करता हे, फिर तुलु होने की इजाजत तलब करता हे, तो उसको इजाजत दी जती हे, और करीब हे कि सुरज सजदा करे और कबुल ना किया जाये और इजाजत तलब करे और इजाजत ना दी जाये, और सुरज से कहा जाये कि जहा से आया हे वहा से लोट जा, फिर सुरज मगरीब (पच्छीम) की तरफ से निकलेगा यही मतलब हे,

अल्लाह के इरशाद का, तरजुमा- और आफताब अपने ठीकाने की तरफ चलता रहता हे, (सुरे यासीन /३८)

नबी करीम صلى الله عليه وسلم ने फरमाया कि सुरज के ठेरने की जगह अर्श के नीचे हे. (बुखारी, मुस्लिम)

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.